P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बी0एड0 कॉलेज में कार्यरत शिक्षक – शिक्षिकाओं की अपने कार्य सन्तुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रमोद कुमार शर्मा
शोध छात्र,
शिक्षा विभाग,
जे0एन0यू0,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

कार्य सन्तुष्टि से तात्पर्य किसी कर्मचारी द्वारा उसके कार्य के प्रति निर्भित अभिवृति या मनोरूख से है। कार्य सन्तुष्टि व्यक्ति की एक ऐसी सुखद और सांवेगिक अनुभूति है जिसे स्वतः व्यक्ति के अपने ही कार्य अथवा कार्य अनुभवों के मूल्यांकन से है, कर्मचारी के सर्वांगीण विकास के लिए अधिक वेतन अच्छा रहन सहन चिकित्सा सम्बंधी सुविधाएँ भविष्य की सुरक्षा आदि अनेक आयाम है। जो उसके कार्य सन्तुष्टि के लिए अनिवार्य है। बी0एड0 कॉलेजो में कार्यरत शिक्षक – शिक्षकाओं में अपने कार्य के प्रति असन्तुष्ट दिखायी पड़ती है, इसका एक मात्र कारण काम के निर्धारित समय का अभाव, वेतन विसंगतिया, योग्यता के अनुकूल वेतन न प्राप्त कर पाना तथा निजी कॉलेजो के प्रबन्धको द्वारा समय–समय पर शिक्षक–शिक्षिकाओं का शोषण करना है। कहने को तथाकथित सहा0 प्रोफेसर लेकिन इनका वेतन दैनिक मजदूरों से भी कम अतः प्रायः देखा जाता है। कि सबसे ज्यादा बेरोजगारी शैक्षिक जगत में पढें लिखे लोगो में दिखायी पड़ता है मजबूरी के कारण शिक्षक –शिक्षिकायें इनके द्वारा शोषित हो रहे है इसका प्रभाव छात्रों की शिक्षा पर पड़ता है क्योंकि इस पेशे में लगे हुए शिक्षक – शिक्षिकाऐं अपने कार्य में समायोजन नहीं कर पाते है और पढ़ने–पढ़ाने में उनका रूचि कम होता चला जाता है तथा अपना ज्यादातर समय प्रबन्धकों की खुशामद करने में ही व्यतीत होता है।

मुख्य शब्द : बी0एड0, कॉलेज, कार्यरत, शिक्षक–शिक्षिकाओं, कार्य सन्तुष्टि।

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो समाज और वातावरण के साथ अपना अद्वितीय समायोजन स्थापित करता है । शिक्षा सामाजिक नियंत्रण का एक सशक्त माध्यम है । शिक्षा की प्राप्ति हेतु जो क्रिया सम्पन्न की जाती है उसे शिक्षण कहते है। जिसमे शिक्षक का स्थान सर्वोपरि होता है। छात्रों के विकास का मुख्य श्रेय शिक्षक को ही है क्योंकि वह अपने निर्देशन से कुसमायोजित छात्रों को भी समायोजित तथा शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता से छात्रों की पहचान कर उत्तम शिक्षण विधि का प्रयोग कर छात्रों को स्वयं राष्ट्र व समाज के लिए तैयार करता है। एक योग्य शिक्षक भौतिक साधनों के अभाव में भी विद्यार्थियों को उत्तम शिक्षा प्रदान कर सकता है। शिक्षक की योग्यता,कार्य कुशलता, अभिक्षमता उसके शिक्षण कार्य को प्रभावित करते है। शिक्षक के शिक्षण कार्य को प्रभावित करने वाले कारकों में से उसकी आकांक्षा –स्तर,कार्य–संतुष्टि एवं मूल्य भी आते है क्योंकि शिक्षक की आकांक्षा एवं कार्य संतुष्टि शिक्षण व्यवसाय में उच्च होगी तभी शिक्षक प्रभावी शिक्षण कर सकता है जिसके द्वारा शिक्षा में सकारात्मक विकास किया जा सकता है परन्तु शैक्षिक प्रक्रिया के विकास के क्षेत्र में वर्तमान शिक्षक की स्थिति सर्वथा भिन्न है। वह निर्धनता,उपेक्षा ,असुरक्षा तथा अनुशासन हीनता से पीड़ित है। समाज में उसे यथोचित मान सम्मान नहीं मिलता है । अर्थात् समाज में शिक्षक को यथोचित मूल्य नहीं मिल पाता है। शिक्षकों की इन समस्याओं का अध्ययन कर उसमें अपेक्षित सुधार आवश्यक है ताकि शिक्षक अपने उत्तरदायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन कर सके और शिक्षा में परिवर्तन एवं परिमार्जन कर समाज एवं राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर पहुँचा सके।

किसी विद्वान ने कहा है कि कार्य सन्तुष्टि में समग्र जीवन की सन्तुष्टि का योगदान शामिल है।

कार्य सन्तुष्टि हमारे संगठन में जीवन की गुणवत्ता का उपसय है प्रबन्धको के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि जीवन की गुणवत्ता के घटक क्या है ? एवं यह जानना कि सहकर्मियों के साथ कैसा व्यवहार है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य है।

1. बी0एड0 कॉलेज में कार्यरत शिक्षक–शिक्षकाओं की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन।
2. बी0एड0 कॉलेज में कार्यरत महिला शिक्षको की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन।
3. बी0एड0 कॉलेज में कार्यरत पुरूष शिक्षको की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन।

शोध अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत शोध में अध्ययन का सीमांकन इस प्रकार से किया गया है।

शोध में अध्ययन का क्षेत्र राजस्थान के करौली जिले तक ही सीमित है।

न्यादर्श

न्यादर्श के रूप में कुल 75–75 शिक्षक –शिक्षकाओं को उद्देश्यानुसार सम्मिलित किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोध उपकरण के रूप में प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनों प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

बी0एड0 कॉलेज में कार्यरत शिक्षक– शिक्षकाओं का अपने कार्य सन्तुष्टि के विभिन्न स्तरों का विश्लेषण

तालिका – 1

शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का विश्लेषण

क्रम0सं0	आयाम	संख्या	प्रतिशत
1	कार्य का अधिक बोझ	15	20
2	वेतन विसंगति के कारण	51	68
3	रोजगार की अनिश्चितता	9	12
	योग	**75**	**100.00**

ग्राफीकल प्रदर्शन

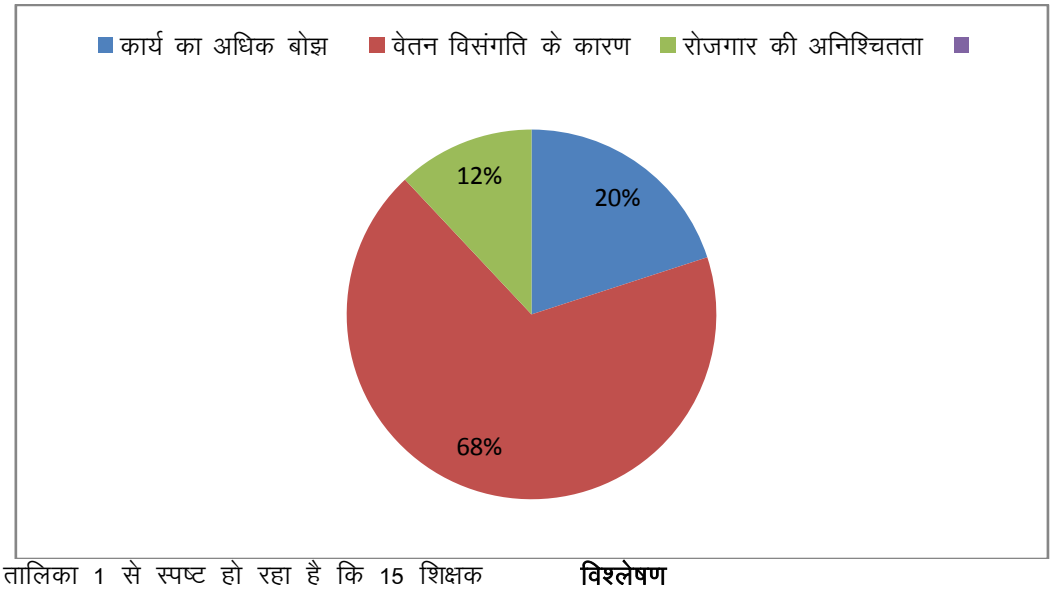

तालिका 1 से स्पष्ट हो रहा है कि 15 शिक्षक (20 प्रतिशत) ऐसे शिक्षक जो कार्य के अधिक बोझ के कारण अपने कार्य के प्रति असन्तुष्ट दिखायी पडे, वहीं 51 शिक्षक (68 प्रतिशत) ऐसे शिक्षक जो वेतन विसंगति के कारण सन्तुष्ट नहीं दिखायी पड़े तथा वही 9 शिक्षक (12प्रतिशत) ऐसे शिक्षक है जो रोजगार की अनिश्चिता को लेकर अपने कार्य से असन्तुष्ट दिखायी पड़ रहे है।

विश्लेषण

निष्कर्ष रूप में यह पाया गया है कि 68 प्रतिशत शिक्षक जो वेतन विसंगति के कारण अपने कार्य के प्रति सन्तुष्टि नहीं दिखायी पड़े क्योंकि शिक्षकों को योग्यतानुसार वेतन न मिल पाने के कारण उनको अपने आवश्यकता की चीजें प्राप्त करने में कठिनाई हो रहीं है। इसी कारण वे अपने कार्य के प्रति असंतुष्ट दिखायी दिये।

शिक्षकाओं की कार्य सन्तुष्टि के विभिन्न स्तरो को विश्लेषण

तालिका – 1.1

क्रम0सं0	आयाम	संख्या	प्रतिशत
1	कार्य के अधिक बोझ	52	69.33
2	रोजगार की अनिश्चितता	17	22.67
3	वेतन विसंगति के कारण	6	8.00
	योग	**75**	**100.00**

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

ग्राफीकल प्रदर्शन

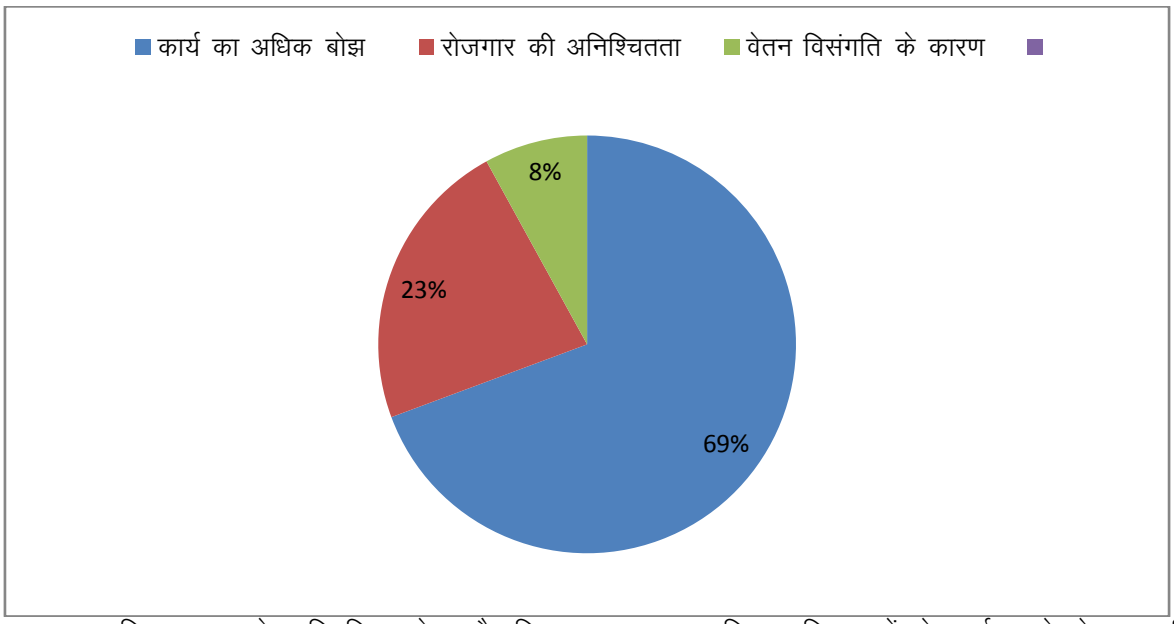

तालिका 1.1 से परिलक्षित होता है कि 6 शिक्षिकाऐं (8 प्रतिशत) ऐसी है जो वेतन विसंगति के कारण अपने कार्य के प्रति असंतुष्ट है वहीं 52 शिक्षिकाएं (69.33) ऐसी शिक्षिकाएं है जो कार्य के अधिक बोझ की वजह से अपने कार्य के प्रति असंतुष्ट दिखायी दी तथा वहीं17 शिक्षिकाएं (22.67) ऐसी शिक्षिकाएं है जो अपने रोजगार की अनिश्चितता के कारण अपने कार्य के प्रति सन्तुष्ट नहीं दिखायी पड़ रहीं है।

विश्लेषण

तालिका 1.1 से स्पष्ट है कि अध्ययनोपरान्त स्पष्ट दिखायी पड़ता है कि 69.33 प्रतिशत शिक्षिकाएं ऐसी है जो कार्य के अधिक बोझ के कारण अपने कार्य के प्रति सन्तुष्ट नहीं है क्योंकि महिला शिक्षकाओ को कार्य के अतिरिक्त अन्य पारिवारिक जिम्मेदारियों का वहन करना पड़ता है जिसका प्रभाव उनके कार्य सन्तुष्टि पर दिखायी पड़ता है।

निष्कर्ष

उपर्यक्त शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर निम्नलिखित सुझाव व्यक्त किये जा सकते है–

1. विद्यालय/महाविद्यालय के शिक्षकों हेतु सभी सुविधाऐं उपलब्ध हो।
2. महाविद्यालय का वातावरण शिक्षकों के अनुकूल हो , जिससे वे अपने कार्य के प्रति समायोजन स्थापित कर सके।
3. शिक्षक–शिक्षकाओं की वेतन विसंगतिया दूर होनी चाहिए ।
4. शिक्षक–शिक्षकाओं के कार्य करने के समय निर्धारित हो।
5. शिक्षक–शिक्षकाओं को यू0जी0सी0 मानक के अनुसार वेतन एवं अन्य सुविधाऐं उपलब्ध करायी जानी चाहिए।

भावी शोधार्थी हेतु सुझाव

1. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक –शिक्षकाओं की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक–शिक्षकाओं का कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर कार्यरत शिक्षक–शिक्षकाओं की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

कोली, लक्ष्मीनारायण : वाई0के0 पब्लिकेशस ,आगरा।

मुखर्जी, रविन्द्रनाथ (1985) सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी ,विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली,

कपिल ,एच0के0(2005) अनुसंधान विधियाँ एच0वी0 भार्गव बुक हाउस, आगरा।

जैन ,मंजू (1981) कार्यशील महिलाएँ एवं सामजिक परिवर्तन प्रिन्टवेल प्रकाश,जयपुर

भार्गव, महेश (1990) आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षा मापन अर्चना प्रिन्टर आगरा।